

अक्षय तृतीया पीछे जन्माष्टमी पहले ग्रहण ग्रस्तास्त होव तो
 दार भोजी उत्थापनमें आरोग्यकी श्रीजमुनाजलमें भिजोष रास-
 नी चंद्रोदय होइ तब दार निकासके भोग धरनी श्रीजमुनाजल-
 वं तुरसी क्यारेने पधरावरेने Pracheen Kram 4

www.vallabhacharya.org
 ॥ अथ कीर्तनविधि हिरवते ॥ भादों वद श्रीजन्माष्टमी ॥

श्रीमहाप्रभुजी जागे पीछे कथाई गावनी
 राग देवगंधार
 www.vallabhacharya.org
 (Pushchimargiya Research Portal)

आज वन कोऊ हो जि न जाय तेन भर देखो नंद कु-
 मार . आज अति वाढ्यो हे अनु राग.

पंचामृतसमे

धनाश्री
 Kirtan Vidhi

रानीजू आपुन मिलि मंगल गावे (शृंगार होती समय) अ-
 भंग आपुन मिलि मंगल गावो माई जावो हो सुतनीजेजसो
 दा रानी तेरो रानी विरजीयो गोपाल . फुली फुलीरीजसोदा
 सुवन फुलन फुली वृषभयो महरिके पव जव वह बाव सुनी
 नंदनंदन वृंदावनचंद आज नंदजूके द्वारे भीर
 (तिलकसमे) आज वधाईरो दिन नीरो

(राजभोग आये पीछे) वधाई माई आज वधाई नंद
 वधाई होजे ग्वालन नंद वधाई वांरत गढे तुम जो मना-
 वत सोई दिन आयो.

(राजभोग दरसन होती समय) एरी ए आज नंद रायके आ-
 नंद भयो सवे ग्वाल नाचें गोपी गावें आज महा मंगल महराने.
 (भोग संध्या आरतीमें) आज कहांते या गोकुलमें अद्भुत वर्षा आई

हो पद्म धरयो जन ताप निवारन वद धरन गिरिवर भुप मोहन
 नंद राय कुमार . भादोंको रात अंधारी आवे भादोंकी अंधारी
 अंधारी भादोंकी रात गोविंद मधु मृदु वानी प्यारे हरिको
 विमल जस गावत गोपांगना यह धन धर्म होते पाओ सुनिबड

भाग ति हो नंद रानी आनंद वधावनो नंदम हरिके धाम जागीभु हरि पुत्र मुख देख्यो आनंद तुर वजायो रावरके कहें गोप आज ब्रज दूनी ओप कान देहे सुनो गोकुलमें वाजे मंदिर रा ऐसी पूत देखी जाये श्रवण सुनि सजनी वाजे मंदिर रा

Core Mota Mandir - Pracheen Kram 4

(जागरण भये पीछे जन्म होती विरियां पंचमृत समे) ब्रज भये महीरे के पूत (महाभोग सारये पीछे) आज नन्दरायके आनंद भये- संवे गवाह जावे गोपी गावे आज मह मंगल महारणे नंद महोछव हो बटकी जै भैरव पर्ये क रायने झुलो पालने मोदिंद अपने वाल गोपाल हि रानीजू पालने झुलावे हालरो हुलरावे माता सांवरो सुत पलना झुले तुम ब्रजरानीके लाल आज अति बढ्यो हे अनुराग नयने भर देखो नंदकुमार आज बन रोक है जिन जाय नंद नंदन वंदावन नंद मोद किनोद आज नंद घर आनंद आज नंद-जूदे द्वार आज नंदजूके द्वारे भोर जाये हो सुतनीको फुली फुली री जसोदा तेरो रानी विरजीयो एह लाल बधाई माई आज बधाई पालने झुलो मेरे लाल प्यारे (असीम) रानीजू विहारो घर सुख कसो वेनि कसी हेत असीम धन्य जसोदाभोग विहारो

Shri Tatji Maharaj Ki Pustak

(भोग संध्यो समे) रानीजू जायो हो मोहन पूत (शयन भोग आये पीछे) यह धन धर्म हीते पायो गावत गोपी मधु मृदु बानी (शयन आरती होती विरियां) आनंद वधावनो नंदम हरिके धाम (पोटती समय) रानी जसुमति ग्रह आवत गोपीजन दूसरे उत्सवकी बधाई (जागवे समय) जै जै श्री ब्रह्म नंदन मोहन जमि हो बलि गई बलिवलि जाज कलेज कीजे मंगल मंगल (मंगल आरती समे) प्रपटी नागरि रूप निधान (शृंगार होते अभ्यंग) कुंवरके संग डोखत नंदरानी जन्म लियो वृष भान गोपके बैठे सब सिंहासनी श्री वृषभान साथजूके आनंद आज बधाई (तिलक होती समय) प्रगट भई हो रावल राधा प्रग.) (राज भोग आये पीछे) वर साने ते दौरि नारि एक नंद भवनमें आइ

हो (आरती होतमें) आज वृष भानके आनंद (भोग संध्या आर-
ती समय) प्रगटी नागरि रूपनिधान प्रगत्यो सब ब्रजको शृंगार (श-
यन भोग आये पीछे) आटे भावोंकी उजियारी (शयन आरती होती
विरियां) श्रीवृषभानरायणके आंगन वाजत आज बधाई (मोटे ती
विरियां) आज गीरीधर दा पायीया धों पेज वनाय-

खल गिरधान संग गधिका मनी

दान सुकादगीकं (मंगला आरती होती विरियां) हमारो दान देउ
गुजरीये (शृंगार होते) दानखील गोवर्धन गीरी गिराखिरेते
मोहन दीनी टेर छवीली नागरी हो रूपकी आगरी हो (राजभोग
आये पीछे) दान धार्य छक आई गोकुलते काकल भर गुजरीया
वावरो केहू केर गई दान मार कृपाकलोकन दान दे (दरसन हो-
तमें) चलने न देत हो यह कटिया (भोग आरती समय) तुमके
जाउ बोवा अपने पग कितरोकत ब्रजवधुनकाट दान मागत हीमें
आनि कछु कीयो (शयन भोग आये पीछे) भैया हो चरो चरो ब्रज
नारी दाधि न केचिये हमारे कुल तुमसां (शयन आरती होतें)
कापर टेलना चलावत मरखनकी जै विधसां वाकरी मोटे रगमहल
गोविंद

श्रीवामन द्वादशीकं (मंगला आरती होतें) हमारो दान देउ गज
रीये (अभ्यंग होतें) कुंवरके संग डोलत नंदराती हमारे गोरस
दान न होइ मोहन लडिलें भोरहीतें काहू भरत मोसु शृंगरो
(शृंगार) बलि वामन हो जग पावन करन (जन्म समय) प्रगटे
श्रीवामन अवतार (भोग आये पीछे) राजा एक पंडित पौरिति-
हारी (दरसन होतें) बलिके द्वारे लडे मोहनो (भोग संध्या आरती (कामने
समें) अष्टपदी (शयन भोग आये पीछे) दाधि न केचिये ह-
मारो कुल दे हो लाल इंदरिया मेरी (शयन आरती होतें)
खिरक दुहाइये आवत ही ब्रजवधु तुंवल मेरो मान राख
आवनको नवल विशार नवल नागरिया

आम्रन सुद १ कुं (मंगला आरती समय) आवत लखन पिया रसभने
 (अभ्यंग होते) कुंवरके संग डोलत नंदरानी ब्रत धर देवी पूजा जावे
 मन अभिलाष न सुजी तवति कुंज देवी (आरती देखवमें) ले दर्पण
 पिय हि दिवावे (राजभोग आये पीछे) विवारी लाल आई डाक
 स लोनी कृष्णकों जीरी देत ब्रज नारी (आरती होते) बलि बलि
 आज की वा निका लाल (भोग सध्या समे) माई आज मन मोहन
 पिय गडे सिंहदर लटकत चलत जुवती सुख दानी (राजनभो
 ग आये पीछे) रानीजू अपने सुत हि जिमावत (पौढती समय)
 पौढे प्यारी राधिकासंग (अमृत लज्जामिका)

दश हरा कुं (मंगला आरती समय) गोकुलको कुल देवता प्यारो
 गिर धर लाल (अभ्यंग होते) कुंवरके संग डोलत नंदरानी (शृं-
 गार होते) गोकुलको कुल देवता प्यारो गिर धर लाल सात वरसो
 सांवगे बोलत तुतराय बार बार हरि सिखवन लागे पूजा विधि
 गिरि राजकी नंदलाल बतावे (राजभोग समय) हमारो देव गोवर्द्धन
 पर्वत सुनिये तात हमारो मन गोवर्द्धन पूजा कीजे (राजनभोग आरती-
 समय) तिनरो स्मिरक कतोई हो कषभान हमारी गैया (भोगके समय)
 आज रघुपति चढे लंक गढ लेनको (जवारा धरते समय) आज
 दशहरा शुभ दिन सीको (भोग आये पीछे) आज पायानको दिन
 नी (आरती होते) आज रघुपति चढे लंक गढ लेनको (राजन-
 भोग आये पीछे) बाल नंदन वही विकट वनचर (राजन आरती हो-
 ते) सब गोकुलकी जीवन गोपाल लाल प्यारो (पौढती विरिण) स-
 ज नीरी गिरि धर लाल पगिया धरे पेच वनाय पौढे लाल लाडि-
 ली संग ले

शरद पुनम कुं मंगला आरती होते प्यारी ग्रीवां भुज मेल नित न
 पिय सुजान (अभ्यंग समय) कुंवरके संग डोलत नंदरानी (शृंगार
 होते) मान लोम्यो गिर धर गावे नागरी नंद लाल संग रंग भरी राजे
 चलो राधिके सुजान आज नागरी कि सोर भावत विचित्र जोर (राज-
 भोग समय) करत हरि नित न नवरंग राधा संग तराणित नषा तीर
 लाल गावत वने (राजभोग आरती होते) वन्यो रासमंडल अहो ब्रज-

जुवती जूथ मधिनायक (भोगसमय) रास मंडलमें बने नाचत पियके संग पौतम प्यारी (संध्या आरती समय) कृष्ण तरणितनया तीर रास मंडलर (शयन भोग आये पीछे) रासमें रसिक मोहन बने भामिन मोहनी मदन गुपालकी वांसरी खोल संग रास रंग देत मान रसिक खन गिरधर थंग थंग नर्त किय थंग नित मान भामिनी गुपाल संग सभग रास आज मोहन रची रासरस मंडली पुरी पुरन नासी पुरो हे शरदको चदा सुनि धुनि मुरली बन बाजे हरि रास रच्यो नंदनेदन आज (अति विराजे राजतंग भोनी भामिनी सांको पीतम) संग अम्भु त भेष धरें जमुना तट श्याम सुंदर गुणनिधान गिरिकर धर रासरंग नाचें खेखत रास रसिक नागर तू गुपाल वौली चळ वेग मुगज लोचनी नचवत गिरिराज धरत मुदित रास रंगे शरद सुहाई हो जा-मिन भामिन रास रच्यो (आरती समय) श्रीवृषभान नंदनी नाचत लालन गिरि धरन संग (पौदती विरिया) दोऊ मिलकत भावली वतियां रूपचौरस कुं अम्भंग होय ता समय आज न्हाओ मेरे कुंकर कन्हेया मानी काळ दिवारी.

दीपमालिका (मंगला आरती समय) पूजा विधि गिरि राजकी नंदला-ल बतारें (अम्भंग होतें) आज हाऊ मेरे कुपर कन्हेया मानी को-लि दिवारी घरी एक छंडो तात विहार आज अमावसे दीपमा-लिका वडी पर्वनी है गोपाल आज कुहुकी रात माधो दीपमालि-का मंगल चार राजभोगसमय हमारे देव गोवर्धन पर्वत गोधन जहा सुखारो नंद गोवर्धन पूजो आज गोवर्धन पूजत है ब्रजराज आन और आन कहत भजे करहत ब्रजनारी नर (आरती होतें) वडडेनकुं आगे ले गिरिधर श्रीगोवर्धनपूजन आवत (भोग-आरती समय) श्याम खिरकके द्वारे करावत गायनको शृंगार (कान जगावके कुं पधारें ता समय) कान जगावत चलेरी कन्हाई (चौक-में पधार चुके तब) खिरक खिलवत गायेन अडे खेखी व्हो खेखी गांग बुलाई धुमारि धोरी दीपदान दे श्याममनोहर सक गायनके कात जगावत (नौ चौकियामे विराजे तब) गाय खिलवत शोभा भारी दि-पत दीपमालिका आज देखो इत दीपतकी सुंदराई (आरती होतें) दीपदान ब्रजराज देत दोऊ दोरनको गोदवैयरी (नौ चौकियासुं

मंदिरमें पधारें तब) सुरभी कान जगाय खिरक कालि मोहन
 बैठे राजत हट्टी दीपदान दे हट्टी बैठे नवल लाल गोवर्धन धारी
 हट्टी बैठे गिरधर लाल आज अमावस दीपमाहिका बड़ी पर्वनी
 है गोपाल आज बुद्धि गति माधा दीपमाहिका माल वारमान
 त पर्व दिवारीको सुख दीपदान की होत आरती
 अन्नकूटके दिन (मंगला आरती समय) पूजा विधि गुरुराजकी
 नदखाल बतावे (शृंगार हात) श्याम खिरकके द्वार करवत गायन-
 को सिंगार खेलनकुंजवगंग वुलई खेलनकुं मौरि आबुखानी
 नीकी खेली गुपालकी गैया (गोवर्धन पूजाकुं पधारें ता समय)
 गोवर्धन पूजन चलेरी गुपाल (गोवर्धन पूजाके समय) हांडी अ-
 रोगे पीछे वड डेनको आगे ले गिरधर गोवर्धन पूजन आवत
 गोवर्धन पूजा कर गोविंद स्व ग्वालन पहरावत खरक खिलवत
 गायन गढे (पीछे पधारें तब) गोवर्धन पूजाके चर आये गोवर्ध-
 न पूजा गोकुल राव (भोग आये पीछे) गोवर्धन पूजा सवैर समीन
 आन और आन कहत भन कर हत ब्रज नारी तरे अपने अपने
 टोळ कहत ब्रजवासिया (पाछे भोग सरे तब) इन्द्रकोपके पद
 अवन छांडी करणकमल महिमा मे जानी जू (उत्थापन भोग
 संध्या समे) जय जय लाल गोवर्धन धारी इन्द्र मानभंग कीना हो
 (राजन भोग आवें तब) इन्द्र अखियन आगे ते लाल एको पल
 छिन हो उन न्यारे अक्की दूध लई जसोवा मैयाकी जै पागल-
 लारे (राजन आरती होती विरियां) कान्ह कुंवरके करपहुव पर माने
 गोवर्धन पर्वत निवे करे मानके पद गावने

भाई दुजको

गोपाष्टमीकुं

अक्षयनौमीकुं

देव प्रबोधनीकुं (मंगला आरती समय) गोविंद तिहारो स्वरूपनि-
 गम नेति जेति गोविंद (अभयंग होते) कर मोरइ मारवत मिथी लै संग
 जेखति नंदरानी आज गोपाल शृंगार बतजं नंद भुवनको भुषनमाइ
 माई आज और कालि और सुमग शृंगार निरख मोहनको (देव
 उटे ता समय) देव दिवारी शुभा राकादडी हरि प्रबोध कीजे हो

आज जागे जगजीवन जगनायक (राजभोग आये तब) छक्रेकी तीन (राजभोग आरती समे) अरी जाके वेदरहृत ब्रम्हा रत्त (भोग संध्या समय) अष्टपदी (शयनभोग आये तब) इन आखिचन आने ते लाल हँस हँस वृध पीवत नाथ (राज आरती समय) मोहन मुखारविंद पर मनमथको चिक्वा गौरी (जागरण समय) पद्म धन्यो जनताप निवारन मोहन नंद राय कुमार वदे धरन गिरवर भूप मातके पद होय महात्मके पद होय मंगल आरती समय मोहन लाल वने रंग भीने (श्रीमहाप्रभुजीके अर्घ्य होय ता समय) आपुन मिलि मंगल गावे सव समय बधाई होय श्रीयजुर्जीकी श्रीमहाप्रभुजीकी श्रीगुसांईजीकी होय मगसर वद ४ तथा मगसर सुद सप्तमी अष्टमीकुं वधाई गावे श्रीमहाप्रभुजीकी श्रीगुसांईजीकी श्रीयजुर्जीकी होय सुप्तमीकुं शयनभोग आये पीछे श्रीगोकुलनाथजीको कडखा गावे

मगसर सुदी अष्टमीकुं सात स्वल्पको उत्सव चहुं जुग वेदवचन प्रतिपाळे बहुरि फूष्ण फिर गोकुल प्रगटे श्रीविठ्ठलनाथ श्रीगोकुल जुग जुग राज करो श्रीगोकुल घर घर अति आनंद (राजभोग समय) सब्राजसिमें कात विहार पोखरी सुख रास सदा श्रीवल्लभ राजकुमार जे वसुदेव किये पूरन तप तेई फल फलित श्रीवल्लभ देव (राजभोग आरती समय) विहरत सातो रूप धरे (भोग संध्या आरती समय) श्रीविठ्ठल प्रभु नमो नमो श्रीवल्लभ लालके गुन गाऊं शयनसमे श्रीविठ्ठलनाथ वसत जिय जाके (शयन आरती में) प्रगट हू मारग रीति दिखाई पोटवेके तथा मानेके मगसर सुद ८ मी श्रीगुसांईजीकी उत्सवकी वधाई बैठे श्रीयजुर्जीकी श्रीमहाप्रभुजीकी श्रीगुसांईजीकी वधाई गावे

पौष वद ८ कुं श्रीगुसांईजीको उत्सव (मंगल आरती समय) नयन भर देखो नंद कुमार (अर्घ्य होते) आपुन मिल मंगल गावे मिल मंगल गावे साई (शृंगार होते) ब्रज भयो म हरिके पूत आनंद आज नंद बुके द्वार (राजभोग समय) वधाई आज वधाई साई वधाई री वाजत आज सुहाई श्रीगोकुल राजके धाम (राजभोग आरती होते) आज वधाईको दिन नीको (भोग संध्या समय)

श्री विठ्ठल प्रभु नमो नमो (रायन भोग आये पीछे) श्रीवल्लभ लालके गुण गाऊं श्रीवल्लभ लालके हो विहारे चरण कमल शरण (रायन आरती होते) प्रगट हू माधग रीति दिरवाई. पौढवेके माके पद होइ

Core Mota Mandir - Pracheen Kram 4

पौष वद ११ कं श्री गोविंदजी महाराजको उत्सव. वधाई नही गावे. माघ वदी ८ कं बडे श्रीराऊजी महाराजको उत्सव. वधाई गावे.

माघ सुदी ५ वसंत पंचमी कु (मंगल आरती होते) मंगल आरती गुणालकी (अभ्यंग समय) कुंवरके संग डोलत नंदरानी (शृंगार हो

ते) तेरो री मोहन अति ही यानो देव अर परी गारी अरी तेरो आनन द्यग आलस जुत राजत रसमसे जागे होरे न तुम सब नेना अरुण हमारे (राज भोग) खुले तव अष्टपदी गावे - हरि रिह ब्रज युवती सरसुडे ललित लकड़ लता पारि शीलन कोमल मलय समीरे

आयो वसंत वस्तु अनुपकतनु तमारे (भोग आये पीछे) श्रीपंचमी परम मंगल दिन मदन महोत्सव आज (आरती होते) श्याम सुभगतन शोभित छोटे नीकी लागी चंदनकी (भोग संस्था आरती) गावत चली है वसंत वधावन नंदराय दरबार (रायन समे) चल

चल हो वृदावन वसंत आयो (रायन आरती होते) करारसुं भीजो कागा भरयो है गुलाल चल चल हो वृदावन वसंत आ पौढे माई मदन मोहन श्याम.

माघ सुदी १५ रोपडी (अभ्यंग समय) कुंवरके संग डोलत नंदरानी (शृंगार होते) धमार गावे श्रीलक्ष्मण कुल गाइये श्रीवल्लभ सुवन सुजान लाल मन मोहना (राज भोग आये पीछे) घोब नृपति सुत गाइये जाके वसिये गाम लाल वलि सुम काहो (खेलकी समये

हरि रिह ब्रज युवती सरसुडे, नंद सुवन ब्रज भाव ते फाग संग मिल खेलो नू (भोग आरती समय) (रायन भोग आये) वस्तु वसंत खे लिये हो आयो फागुन मास (रायन समे) सब ब्रज कुलके राय लाल मन मोहना. पौढवे समय पौढवेके माके चल चल हो वृदावन वसंत आयो पौढिये लाल लडली संग है.

फागुन वद ७ श्रीनाथजीको पायेत्सव (मंगल आरती होते)

होरी नंदलाल संग खेलोगी (अभ्यंग होते) खेलिये लाल सुंदर
 होरी खेलिये (राजभोग आयें) हो हो बोलत जे बत खेलत होरी
 (खेलकी विरियां) व धाई गावे पीछे धमार पहले अष्टपदी
 धरि धरि मंदर जो सो मरी हो धन्य श्री गोकुल गाम लाल सुंदर रंग
 मंगोकी जै (भोग संस्था समय) श्री गोकुल राज कुमार लाल रंग भीने
 हो (शयन भोग आयें पीछे) राय सेकी सकल कुंवर गोकुलके निक
 से है खेलन प्राग (पौढती समय) चल चल हो वृदावन वसंत आयो
 पीछे धरि धरि गिर धर राय

फागुन सुद १० सुं मारी गावे

फागुन सुद ११ कुंज एफादशी कुं (मंगल आरती) होतें होरी नंदलाल
 सुं खेलोगी (शृंगार होती विरियां) वरसानेकी गोपी मांगन फगुवा
 ओई हो (राजभोगकी विरियां) धरि ते लालनको मन हन्यो श्याम
 रगीली चुनरी (राजभोग सरे) मदन गोपाल झुलत जेले आज भाई
 झुलत है नंदलाल मनमोहन अद्भुत जे लवनी जे ल झुलत
 है पिथ धरि (भोग संस्था आरती समें) मदन मोहन गहवर वन खे-
 लत ससि धमार (शयन भोग आयें पीछे) नवल दहाई हो धरि
 (शयन आरती होतें) डोल गावे श्री वृन्दावनमें कालिंदीके तीर
 डोल चंदनको पौढती विरियां चल चल हो वृन्दावन वसंत आयो च-
 ले हो भावते रस एन

फागुन सुद १५ होलीको उत्सव कुं (मंगल आरती होतें) होरी
 नंदलाल सुं खेलोगी (अभ्यंग होते) खेलिये सुंदर लाल होरी
 चैन वद १ डोलो उत्सव कुं जागती विरियां श्रीवल्लभ नंदनकी कलि जाळ
 खिलवन आवेंगी ब्रज नारी ग्वालिन पिछकारे बोल सुनायो (आरती
 होतें) होरी नंदलाल सुं खेलोगी (अभ्यंग होते) खेलिये सुंदर लाल
 होरी खेलिये (राजभोग सरे तब) अगी चल उकीली हरि सो
 खेलत जाय (डोलमें भोग आयें पीछे) चौध नृपति सुत गाइये
 कसिये जाके गाम लाल कलि झुमका नद सुवन ब्रज भावते प्राग संग
 मिलि खेलो जू (पहले भोगके दरसन होतें) मदन गोपाल झुलत

डोल झूलत डोल नंद किशोर (दूसरे भोग आये) धमारि वरसानेकी
 गोपी मांगन फगुना आई गोपी हो नंदराय घर मांगन फगुना आई (दु-
 सरे भोगके दरीन होतें) शोभा सकल शिरोमणी हो दंपति झुलें डोल
 झूलत गुग रमनीय किशोर (तीसरे भोग) आये पीछे धमार सुर-
 गी होगी खेले सांवरो माधो चांचर खेल हीं अहो पिय लख लखे लीकी
 झुमका (तीसरे भोग सुरे) आज लखनालाल फाग खेलत बने भिख
 झूलत सखी नवरंग डोल डोल झूलत लख विहारी डोल झूलत
 ह्यारी लख विहारी डोल झूलत हैं प्रिय प्यारी नंदन वृषभान
 दुलारी (खेले आरती भये पीछे) खेल फाग फूल बेंडे झूलत डोल
 डहडहे नागर नैन कमल खेलत वसंत वर विडलेवा पीछे (असीस)
 खेल फाग अनुराग बढ्यो जुवती जन देत असीस (डोलमेसू पधारंतके)
 एक तुक गावनी (अनुरागे यागे रससां तव नंदद्वार पै आये जू (भोग
 संध्या आरती समें) खेल फाग फूल बेंडे झूलत डोल डहडहे नागर
 नैन कमल (शयत आरती होती किरियां) डोल वंदनको झूलत हल
 धरकीर पौढती समयके मानके पद
 चैन वदी २ द्वितीया पादकूं (मंगल आरती होतें) मंगल आरती गो-
 पालकी (अभ्यंग समय) कुवले सांग डोलत नंदरानी आवे गुपाल
 शृंगार बनाऊं रासिक शिरोमणि नंदलाल रंग भीने हो नंदभवनको
 भूषन भाई आज और कालि और सुभग शृंगार निरख मोहनको
 राज भोग आये पीछे छाकके पद बीडी लख लख रहे श्री राधा
 के भर (राजभोग आरती होतें) कलि कलि आजकी कानि कलाल
 (भोग आरती होतें) यावतिक परवल २ जाऊं आज वनेरी लख-
 लन गिरिधारी (शयत भोग आये पीछे) व्याखके पद मोहन-
 लाल विचारकी जै (शयत आरती होतें) मौ पै आजकी कानिक
 कहीन जाय पौढती किरियां मानके पद
 चैन सुद १ संव (सरो लखकूं (मंगल आरती होतें) मंगल आरती
 गुपालकी (अभ्यंग समय) कुवले सांग डोलत नंदरानी (शृंगार
 होतें) राजभोग आवे नित्यके पद होइ (राजभोग आरती होतें)
 कलि कलि आजकी कानि कलाल फूलनकी मंडली मनोहर बेंडेजू
 रासिक पिय प्यारी (भोगसंध्या समें) बेंडे लख फूलनकी चौरवडी

लखन नखत जुवती सुखदानी (राजन भोग आयें) इन अखियन आगे
ते लख एको पल जिन होउ न्यारे हंस हंस दुध पीवत नथ रायन आ
रती होतें लखके वदनपर आरती वारें पौढती विरियां मानके पद.

वैशाख सुद ९ श्रीरामनौमीकुं

वैशाख सुद ११ श्रीमहा प्रभुजीके उत्सवकी बधाई करे तै दिन श्रीवकु-
रजीकी श्रीमहा प्रभुजीकी बधाई होइ (मंगल समया जागती विरियां)
श्रीविठ्ठलनाथजीके चरण गरण सोहन जागि हो बल गई कलि वलि
जाखं कलेज कीजे (आरती होतें) आज ग्रह नद महरके बधाई (अ-
भ्यंग होतें) आपुन मिलि मंगल गाके ब्रज मयो महरके पुत आज
नंदजुके द्वारे भीर (राज भोग आयें) तुम जो मनावत सोई दिन आयो
बधाई ही वाजत आज सुहाई श्रीगोकुल राजके धाम (राज भोग आ-
रती होतें) आज बधाईको दिन नीको (भोग संध्या समय) भागिन
बल्ल भजन भयो श्रीवल्लभ श्रीवल्लभ गुन गाऊं (रायन भोग
आयें पीछें) श्रीलक्ष्मण गृह महामंगल मयो प्रगटे श्रीवल्लभ पुरन
काम (रायन आरती होतें) प्रगटके मारग रीति दिखाई पौढती
विरियां मानके पद.

वैशाख सुद ३ अक्षय तृतीया (मंगल आरती होतें) श्रीतम दोऊवने
मर गजे वागे (अभ्यंग भंगोर होतें) लख आज खेरी शिबिल दे-
खियत और नित्यके पद (चंद्र च पहरे ता समय) अक्षय तृतीया
अक्षय लीला नवरग गिरधर पहरत चंदन (उत्सव भोग आयें पीछें)
आज वने नंद नंदरी नव चंदनको तन लेप दियें देख सरसी गोवि-
दके चंदन शोभित सांवरे अंग (दरीन खुले आरती होतें) देवरी देख
रासिक नंद नंदन (भोग संध्या आरती समय) आज वने नंद नंदनरी
नवचंदन अंग अरगना लायें पिछोरा खासको कटि बांधें (रायन-
भोग आयें पीछें) इन अखियन आगे ते लखन पल छिन होउ न्यारे
(रायन भोग आयें) व्यासके पद (रायन आरती होतें) आजको दिन
धनि २ श्रीमाई चयन अर देखो नंद नंदन पौढती समय मानके पद
वैशाख सुद १४ श्री श्रीनृसिंह जयतीकुं (मंगल आरती होतें)

आवत ललन पिचा चार स भीने (अभ्यंग होते) कुंवर के संग डोलत नं-
 दरानी (शृंगार होते) बलि बलि पाठ धारिये सुंदर दो व कोन को सुं-
 दर सुंद बानी तें मेरी लाल गंवाई जस मातिके दो व माई आज और
 कालि और (राज भोग आयें) पीछें छाकके पद होई (राज भोग
 आरती होते) अरी जाको वर रतन ब्रह्म रतन (भोग संस्था) अ-
 ष्ट परी प्रलय पुण्योधि जल पूत (पंचामृत समाप्त) सुहरु माघो
 प्रथम (होते) पौदती विरियां मानके पद
 ज्येष्ठ वद २ कुं ज्येष्ठ सुद १० गंगा दसमी कुं श्रीगोवर्धन गिरि सध-
 न कंदारें न निवास कियो पिय प्यारी (शृंगार होते) आगे आगे रथ
 भागी रथजु को गंगा तुव त्रिभुवन जस खुर्यो तरणितनया तीर आवत
 हो द्रात समय गेदुक खेलत आवंदको कंद वा बारी तेरे या मुखपर
 लाल (राज भोग आयें) छाकके पद कीरी के पद (राज भोग आ-
 रती होते) ओदें लाल उपरनी झीनी (भोग संस्था आरती समय)
 अवके पैर लीजे सुपुर रथ कह तान पिछौरा खासा को कटि बांधे
 (शयन भोग आयें) व्यासके पौदके मानके पद
 स्नान यात्राके पतले दिन (शयन भोग आयें) जलको गई सघट
 नेह भर लाई लगी है बटपरी दरसको आगे चल प्यारी जहा सघन
 नवल कि कुंज भारे पौदें झीनी पट्टे ओदें स्नान यात्राके दिन संगल
 आरती होतें तिलक होतें करत गुपाल जमुना जल कीडा (शृंगार
 होते) नमो देविं वसुने कृष्ण मिलनांतराय ज्येष्ठ मास पूर्ण्योको सु-
 भ दिन करत स्नान गोवर्धन धारी (आरती देखते) ले दर्पण पि-
 य कर पियहि दिखावे (राज भोग आयें) छाकके पद कीडीके
 पद गावें (राज भोग आरती होते) मोहि मिलत भावे बलवीरकी
 (भोग संस्था समय) लाल उपरनी ओदें मीनी पिछौरा खासाको
 कटि बांधे (शयन भोग आयें) व्यासके पद (शयन आरती होते)
 चारु नट भेष धरे कैंठे गोविंद जहा सघन गूहर वन निरुंन भवने
 पौदते समय मानके पद
 रथ यात्रा कुं (संगल आरती समय) झुमक सारी होतन गौरे
 (अभ्यंग समय) कुंवरके संग डोलत नंदरानी (शृंगार होते) देखरो
 सरखी नंदनंदन मदगत राजकी सो बाल ले दर्पण पिय करहि दि-

रवावे (राज भोग सरे) रथमें विराजे (राम मखार) कुंवर चलो हो
 आगे नू गहवर जहां बोलत मधुरे वेन तू चले नंदनदन वन बोली
 (रथके दर्शन होतें) तूम देखो माई रथ बैठे गिरधारी (दूसरे भोग
 आवे तब) **Mota Mandir - Prabhesh Kram 4**
 भांति देव नाने गोपाल (दूसरे भोग आवे तब) तूम देखो माई
 हरि जुके रथकी शोभा (तीसरे भोग आवे तब) वृंदावन कनक भूमि
 नितीत ब्रज नृपति कुंवर पावसनट नट्यो अखारो वृंदावन गावत रसि-
 कराय ब्रज नृपति कुंवर गोवर्धन पवत ऊपर परम मुदिन बालन हे मौर
 वृंदावन भुव कुमुदा दिक युत मंदानल स चिरे (रथके दर्शन होतें) ज-
 य श्री जगन्नाथ हरि देवा (रथमें आरती भये पीछे) वह पट पीतकी
 पह रान (संध्या आरती भोग समे) गावत रसिक राय ब्रज नृपति कुंवर
 लडलो लडाय वृंदावन धेनु (राधन भोग आये) मलारमें गावने न्या-
 र्थ कीजिये चन श्याम कोऊ माई ले होरी गोपाल हि (राधन आरती
 होतें) राग अजानो सुंदर वदनरी सुरकसरन श्यामको निरख नेन
 मन थाक्यो (मानके पर) तू चले नंदनदन वन बोली पौंटे कुंजम-
 हल गोविंद **Shri Tatji Maharaj Ki Pustak**
 षष्ठ पिंडरुके दिन (मंगला आरती समय) लाल माई बांधे कू सुमी
 पाग (शृंगार होतें) लाल माई लागत आज सुहाये देवो माई सुंदर-
 ताको सागर कोऊ माई तिहारे गोपाल हि (आरती देखतें) लाल
 मेरी सुरंग नूनरी देहो (राज भोग आये पीछे) मलारमें भोजनके पद
 यह तो भाग पुरुष मेरी माई भोजन करत हैं गोपाल कृष्णको
 नीरी देह ब्रजनारी (राज भोग आरती होतें) ब्रज परतीकी आज
 घटा (भोग संध्या आरती समय) इन मौरनकी बलिहारी गाय सव
 गोवर्धनते आई (राधन भोग आये पीछे) लाल भीजत आये मेरे
 गृह सुखीरी मोही वृंद अचानक लागी (राधन आरती होतें) गावत
 रसिक राय ब्रज नृपति कुंवर मानके पद माननकीजे माननी करण
 वस्तु आईरी पौंटे राधिका उर लय
Mota Mandir
 श्रावण वदी में हिंडोर (मंगला आरती समय) तू चले नंदनदन

वन बोलीं (अभ्यंग समय) कुंवरके संग डोलत नंदरानी सरवीरी आ-
ज शोभा देख वनकी देखो माई सुंदरताके सागर आई जू श्याम
जलद घय बहं दिसते घनघोर (राज भोग आयें) जैवत नंद बान्
इ करेरे आज राधे मोहन मदन गुपाल (राज भोग आरती होते) आ-
वण बूलाह आयो सांझकुं जगमोहनमें गावें हिंडोरना हो राधो नंद
अवास टुकुराजीके संनिधान झूलते समय राग मलार झूलन
आई ब्रजगरी गिरधर दाल जूके संग हिंडोरना झूलत राग हिं-
डोरें राधा मोहन तेसो ही वृंदावन तेसो यह रित भूमि तेसो यह वीर
वधु राग मन्थो सिंहद्वार रायन भोग आयें हिंडोरें माई झूलनके
दिन आयें (रायन आरती होतें) वृंदावन झूलत गिरधर धारी
(मानके पद) तू चल नंदनंदन वन बोली त्वेनी त्वेनी वृंदन हो पि-
य वसे सधन घय घनघोर

Kirtan Vidhi

श्रावण वदी - सुं ब धाई बैठें सवेरके समय ब धाई गावें
श्रावण सुद ३ टुकुराजी तीज (मंगला आरती समें) (राग मलार)
बोले माई गोवर्धनपै मुरवा (अभ्यंग होतें) कुंवरके संग डोलत नं-
दरानी (शृंगार होतें) ब्रज भयो महारिकें पूज आज नंदरजके द्वार
भीर (राज भोग आयें पीछे) देखो अद भुव अव गतिकी गति
कैसो रूप धन्यो हे हो (राज भोगके दरिन होतें) धन्य जसोदा
भाग तिहारो जिन ऐसो सुत जायो हो (सांझकुं) राधे जू दे-
रिखे वन शोभा राग मलार आलीरी सांवन तीज मुहाग हिंडो-
रना झूलन आई नई ऋतु श्रावन तीज सुहाई एरी हिंडोरना
झूलन आई बोली हें श्याम सुहाई नवल लालके संग झूलन आई
हे हिंडोरें (रायन भोग आयें) राग विहागरो झूलत नवल किशोरी
लालन एरी हिंडोरना (रायन आरती होतें) लाल मुनिनके मुंडन
झूलन आई हिंडोरें राग मलार माननकी जै माननी वरषा ऋतु
आई पौढिये प्यार गिरधरराज
श्रावण सुद ११ पवित्रा लका वली कुं (मंगला आरती होतें)
नयन भर देखो नंद कुमार (शृंगार होतें) ब्रज भयो महारिकें पूज

(राज भोग आये पीछे) व धाई री आज सुहाई श्री गोकुल राज के धाम
 तुम जो मनावत सोई दिन आयो (राज भोग आरती होतें) एरो री
 आज नंद राय के आनंद भयो (पवित्रा के समय) पवित्रा पहरत
 राज कुमार (वहू वंदी झुलवे) ता समय जग मोहन मे राग भोरठ
 सुरंग हिंडोरना रग भामे नृप वज राय को (हिंडोरके दर्शन होतें)
 राग विहागरो लाल मुनिन के झुंडन झुलन आई हो हिंडोरें सुरंग
 हिंडोरें झुलें झुलत दोम लाल गिरिधर धारी तब लालके झुं
 डन झुलन आई हो हिंडोरें (राजन भोग आयें) राग मलार कर
 वादर ओलहरि आये तमाधि झुलत रग हिंडोरें ओलहरि आई
 हो घनघटा हिंडोरें व झुलत हैं श्यामा श्याम (राजन आरती
 होतें) राधाजू झुलत रमेक रमक मानके पद राग मलार सखी-
 री आज देव शोभा वनकी राग विहागरो पौढे में पौढे झीनो
 पट दे ओट

श्रावण सुद १५ राखी पुनम (मंगल आरती होतें) आज वन को
 ऊ हो जि न जाय (अभ्यंग होतें) आपुन मिलि मंगल गावे मि-
 लि मंगल गावे मंडी व्रज भयो महारिके पूव आनंद आज नंदजू-
 के द्वार (राज भोग आये पीछे) राग आसावरी सुंदर व्रजकी बा
 ल्या जुरी वली हें व धावन नंद महारिके द्वार (राज भोग आरती
 होतें) राग सारंग सब ग्वालन नाचे गोपी गावें (राखी बांधें
 ता समय) राग सारंग वहनि सहोद्रा राखी बांधति (सांझ कूंज-
 ग मोहनके) झुले झुले हो मन भावन (दरसन होतें) राग अडाने
 नो श्रावनकी पुन्या मन भावन हरि आये घरे झुलेंगी पचरंग डो-
 री बांध हिंडोरें पावस क्रुतु आनंद भर झुली झुली हो पियसंग
 (राजन भोग आये पीछे) राग विहागरो झुलत गिरिधर लाल लाल
 ल मुनिन के झुंडन झुलन आई हो हिंडोरें (माने) तू चल नंदनेरन
 वन बोली पौढे कुज पहल गा विद ॥

इति श्री नवनीत त्रियजीके घरके उत्सवनकी कीर्तनविधिः संपूर्णः

